नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : .....

दिनांक :16.08.2018

प्रकाशनार्थ

मानवता के पुजारी स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने अपने आध्यत्मिक आंदोलन से परोक्ष रूप से देश में राष्ट्रवाद की भावना से लोगों को शिक्षा देते थे तथा लोगो के भीतर निस्वार्थ कर्म, आध्यत्मिक गुण, ऊँचे आदर्श दया, पवित्रता, प्रेम, भक्ति आदि सात्विक विचारों का सृजन करते थे। स्वामी विवेकानन्द इनके प्रिय शिष्य थे वे हिमालय पर जा कर एकान्त में कुछ साधना करना चाहते थे। यही आज्ञा लेने जब वे गुरू के पास गये तो राम कृष्ण ने कहा 'वत्स हमारे आस – पास के क्षेत्र के लोग भूख से तड़फ रहे है। चारो ओर अज्ञान अंधेरा है। यहॉ लोग रोते–चिल्लाते रहे और तुम आनन्द में निमग्न रहो। क्या तुम्हारी आत्मा स्वीकारेगी?' स्वामी रामकृष्ण परमहंस के आज्ञा से स्वामी विवेकानन्द दरीद्र नारायण की सेवा में लग गये।

श्री रामकृष्ण परमहंस भारत के एक महान संत एवं विचारक थे। इन्होने सभी धर्मो की एकता पर जोर दिया। इन्हे बचपन से ही विश्वास था कि ईश्वर के दर्शन हो सकते है अतः ईश्वर की प्राप्ति के लिए इन्होने कठोर साधना और भक्ति का जीवन बिताया। स्वामी रामकृष्ण मानवता के पुजारी थे। अपनी साधना के फलस्वरूप वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संसार के सभी धर्म सच्चे है और उनमे कोई मित्रता नही। वे ईश्वर तक पहुँचने के भिन्न साधन मात्र है। रामकृष्ण परमहंस अपने जीवन के अन्तिम दिनो में समाधि में रहने लगे जिसके कारण उनका शरीर शिथिल हो गया। 16 अगस्त 1886 ई. को श्री रामकृष्ण परमहंस इस नश्वर शरीर को त्याग कर देव लोकवासी हो गये। ऐसे महान संत विचारक और मानवीय मूल्यों के पोषक को उनके पुण्यतिथि पर पूरा महाविद्यालय परिवार हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है। उक्त बातें प्रार्थना सभा में **रामकृष्ण परमहंस समाधिस्थ दिवस** के अवसर पर **बी.एड. विभाग प्रवक्ता श्रीमती पुष्पा निषाद** ने अपने उद्‌बोधन में कही। इस मौके पर महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, सुश्री दीप्ती गुप्ता शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(डॉ. राजेश शुक्ला)

सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी